मासिक पत्रिका

सैनिक मित्र संवाद

नवम्बर, 2021

VOLUME - 01 | ISSUE - 04

राष्ट्र रक्षा न समं पुण्यम्

सकारात्मक समाज के पथ प्रदर्शन में **माँ का महत्व**

खेल खेल में

सैनिक मित्र योजना
राष्ट्रहित सर्वोपरि

मुग़लों से लोहा लेने वाले वीर बंदा सिंह बहादुर की शौर्य गाथा

सकारात्मक समाज के पथ प्रदर्शन में माँ का महत्व

कर्नल शिवदान सिंह

यदि मां गर्भ के समय सकारात्मक विचार रखती है तो बच्चे में बहुमुखी सकारात्मकता, मिलकर चलने की भावना, नए नए अनुभवों के लिए तैयार रहने वाला और उच्च स्वाभिमान की भावना उसके अंदर जन्म से ही उत्पन्न होंगी, और यदि मां नकारात्मक विचारों में घिरी है तो बच्चे में हीन भावना, संशय, आत्मग्लानि, समाज से अलग–थलग रहने जैसे अवगुण देखे जा सकते हैं

संसार में दो माँ होती हैं पहली जन्म देने वाली और दूसरी प्रकृति मां जिसके तत्वों और गुणों से मनुष्य के शरीर का निर्माण होता है ! जन्म तथा शरीर निर्माण के अलावा भी यह दोनों मां मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं ! मनुष्य का सकारात्मक या नकारात्मक व्यक्तित्व इन्हीं की देन है ! सनातन धर्म के शास्त्रों और मनोवैज्ञानिकों के अनुसार जिस प्रकार के भाव एक मां बच्चे के गर्भ में होने के समय रखती है उनका प्रभाव गर्भ में पल रहे बच्चे की मानसिकता पर भी पड़ता है ! यदि मां गर्भ के समय सकारात्मक विचार रखती है तो बच्चे में बहुमुखी सकारात्मकता, मिलकर चलने की भावना, नए नए अनुभवों के लिए तैयार रहने वाला और उच्च स्वाभिमान की भावना उसके अंदर जन्म से ही उत्पन्न होंगी, और यदि मां नकारात्मक विचारों में घिरी है तो बच्चे में हीन भावना, संशय, आत्मग्लानि, समाज से अलग–थलग रहने जैसे अवगुण देखे जा सकते हैं !

इसके साथ–साथ प्रकृति और उसके मौसम भी उसके व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते हैं, जैसे पहाड़ी क्षेत्र या मुश्किल रेगिस्तान उसको जीवट और उसे मुश्किल परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता प्रदान करती है ! प्रकृति की इन सख्त हालातों में यदि वहां पर वातावरण भी हिंसक और नकारात्मक होता है तो व्यक्ति जीवन के गलत रास्तों पर चलने लगता है ! अफगानिस्तान में पिछले लंबे समय से राष्ट्रीय स्तर पर नकारात्मक वातावरण बना हुआ है जिसके कारण बड़ी संख्या में वहां की नई पीढ़ियां आतंकवाद के रास्ते पर चल रही है जिसके कारण अफगानिस्तान और उसके आसपास केवल विनाश ही नजर आ रहा है !

इतिहास गवाह है कि जिन देशों में स्त्री का उचित सम्मान और स्थान है वहां की संताने विश्व की सुख समृद्धि में वृद्धि कर रही हैं ! वहीं पर पाकिस्तान अफगानिस्तान जैसे देश विश्व को केवल आतंकियों के रूप में हिंसा तथा तनाव दे रहे हैं ! मां की महत्ता को देखते हुए भारत में सनातन धर्मी मां को देवी दुर्गा के रूप में पूजते हैं जो यह दर्शाता है कि मां का स्थान सर्वोपरि है ! वीर शिवाजी की मां जीजाबाई ने शिवाजी के स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपने पति का साथ छोड़कर शिवाजी को लेकर वे महाराष्ट्र के एक छोटे से गांव में आ गई थी ! जहां पर उन्होंने शिवाजी को स्वस्थ वातावरण उपलब्ध कराया जिसका परिणाम पूरे विश्व ने वीर शिवाजी के रूप में देखा। इसके अतिरिक्त भारत में इस प्रकार के अनेक उदाहरण हैं कि किस प्रकार एक माँ ने अपने बच्चे को सर्वगुण संपन्न बनाकर उसे जीवन में सफलता दिलाई।

इस प्रकार देखते हुए हमें स्त्री और प्रकृति का भरपूर सम्मान करना चाहिए और उनकी रक्षा भी करनी चाहिए जिससे विश्व को सकारात्मक विचारों वाली नई पीढ़ी उपलब्ध हो जो विश्व में चारों तरफ सुख शांति फैलाएं!

क्या आप जानते हैं?

परमवीर चक्र का इतिहास

स्वतंत्र भारत में पराक्रमी वीरों को युद्ध भूमि में दिखाये गये शौर्य के लिए अनेक प्रतीक सम्मान पुरस्कारों का चलन शुरू हुआ। 15 अगस्त 1947 से वर्ष 1950 तक भारत अपना संविधान रचने में व्यस्त रहा। 26 जनवरी 1950 को जो विधान लागू हुआ, उसे 1947 से प्रभावी माना गया। वह इसलिए जिससे 1947–48 में हुए भारत–पाक युद्ध के वीरों को, जिन्होंने जम्मू– कश्मीर के मोर्चों पर अपना शौर्य दिखाया, उन्हें भी पुरस्कारों से सम्मानित किया जा सके।

इस पुरस्कार की भी स्थापना 26 जनवरी 1950 को ही की गयी थी। भारतीय सेना के किसी भी अंग के अधिकारी या कर्मचारी इस पुरस्कार के पात्र होते हैं एवं इसे देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न के बाद सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार समझा जाता है। इससे पहले जब भारतीय सेना ब्रिटिश सेना के तहत कार्य करती थी तो सेना का सर्वोच्च सम्मान विक्टोरिया क्रास हुआ करता था।

पुरूस्कार कैसे दिया जाता हैं

परमवीर चक्र वीरता की श्रेष्ठतम श्रेणी में, युद्ध भूमि में प्रदर्शित पराक्रम के लिए दिया जाता है। यह पुरस्कार वीर सैनिक को स्वयं या मरणोपरांत दिये जाने की स्थिति में, उसके प्रतिनिधि को सम्मानपूर्वक दिया जाता है। इस पुरस्कार को देश के तत्कालीन राष्ट्रपति विशिष्ट समारोह में अपने हाथों से प्रदान करते हैं। यह पुरस्कार तीनों सेनाओं के वीरों को समान रूप से दिया जाता है। इस पुरस्कार में स्त्री पुरुष का भेदभाव भी मान्य नहीं है।

इस पुरस्कार में लेफ्टीनेंट या उससे कमतर पदों के सैन्य कर्मचारी को यह पुरस्कार मिलने पर उन्हें (या उनके आश्रितों को) नकद राशि या पेंशन देने का भी प्रावधान है। हालांकि पेंशन की न्यून राशि जो सैन्य विधवाओं को उनके पुनर्विवाह या मरने से पहले तक दी जाती है अभी तक विवादास्पद रही है। मार्च 1999 में यह राशि बढ़ाकर 1500 रुपये प्रतिमाह कर दी गयी थी। जबकि कई प्रांतीय सरकारों ने परमवीर चक्र से सम्मानित सैन्य अधिकारी के आश्रितों को इससे कहीं अधिक राशि की पेंशन मुहैय्या करवाती है।

ज्यादातर स्थितियों में यह सम्मान मरणोपरांत दिया गया है। यदि कोई परम वीर चक्र विजेता दोबारा शौर्यता का परिचय देता है और उसे परम वीर चक्र के लिए चुना जाता है तो इस स्थिति में उसका पहला चक्र निरस्त करके उसे रिबैंड दिया जाता है। इसके बाद हर बहादुरी पर उसके रिबैंड बार की संख्या बढ़ाई जाती है। इस प्रक्रिया को मरणोपरांत भी किया जाता है। प्रत्येक रिबैंड बार पर इंद्र के वज्र की प्रतिकृति बनी होती है, तथा इसे रिबैंड के साथ ही लगाया जाता है।

परमवीर चक्र का डिजाइन

इस सर्वोच्च पदक परमवीर चक्र का डिजाइन विदेशी मूल की एक महिला ने किया था और 1950 से अब तक इसके आरंभिक स्वरूप में किसी तरह का कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। इस पदक की संरचना एवं इस पर अंकित आकृतियां भारतीय संस्कृति एवं दैविक वीरता को उद्धृत करती हैं। भारतीय

सेना की ओर से 'मेजर जनरल हीरालाल अटल' ने परमवीर चक्र डिजाइन करने की जिम्मेदारी 'सावित्री खालोनकर उर्फ सावित्री बाई' को सौंपी जो मूल रूप से भारतीय नहीं थीं।

स्विट्जरलैंड में 20 जुलाई 1913 को जन्मी सावित्री बाई का मूल नाम 'ईवावोन लिंडा मेडे डे मारोस' था जिन्होंने अपने अभिवावक के विरोध के बावजूद 1932 में भारतीय सेना की सिख रेजीमेंट के तत्कालीन कैप्टन विक्रम खानोलकर से प्रेम विवाह के बाद हिंदू धर्म स्वीकार कर लिया था।

मेजर जनरल अटल ने भारतीय पौराणिक साहित्य संस्कृत और वेदांत के क्षेत्र में सावित्री बाई के ज्ञान को देखते हुए उन्हें परमवीर चक्र का डिजाइन तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी। तत्कालीन समय उनके पति भी मेजर जनरल बन चुके थे। मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) 'इयान कारडोजो' की हालिया प्रकाशित पुस्तक परमवीर चक्र के मुताबिक सावित्री बाई ने भारतीय सेना के भरोसे पर खरा उतरते हुए सैन्य वीरता के सर्वोच्च पदक के डिजाइन के कल्पित रूप को साकार किया। पदक की संरचना के लिए उन्होंने महर्षि दधीचि से प्रेरणा ली जिन्होंने देवताओं का अमोघ अस्त्र बनाने को अपनी अस्थियां दान कर दी थीं जिससे 'इंद्र के वज्र' का निर्माण हुआ था।

वीर बंदा सिंह बहादुर

की बहादुरी से भागे मुग़ल

बन्दा सिंह बहादुर का जन्म 16 अक्टूबर 1670 ई. को जम्मू–कश्मीर के पुंछ जिले के एक गाँव रजौरी में हुआ। उनका बचपन का नाम लछमन दास था। आपके पिता रामदेव राजपूत डोगरे, स्थानीय जमींदार थे। यौवनावस्था में ही लछमन दास ने सन्यासियों की शरण ले ली व 1686 ईसवी में दीक्षा लेकर माधोदास के नाम से गोदावरी नदी के तट पर नंदेड़ नगर में आश्रम बनाकर रहने लगे। एकबार गुरू गोविंद सिंह उनके आश्रम आए और माधोदास की बल–बुद्धि से प्रसन्न होकर उनको जीवन चरित्र से सन्त और कर्त्तव्य से सिपाही होने की दीक्षा दी और उनका नाम गुरूबख्श सिंह रख दिया। परन्तु वह अपने आप को गुरू गोविन्द सिंह जी का बन्दा ही कहलाता रहा। इसीलिए इतिहास में वह बंदा बहादुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

बन्दा सिंह बहादुर ने गुरू के आदेश पर पंजाब में विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले सिक्खों को एकजुट कर दुष्टों को परास्त करने का अभियान शुरू किया और मृत्युपर्यन्त मुगलों के खिलाफ वीरता से लोहा लेते रहे।

सूर्य की पहली किरण धरती पर पड़ते ही युद्ध प्रारम्भ हो गया। शाही सेना नाअरा–ए–तकबीर– अल्लाह हू अकबर के नारे बुलंद करते हुए सिंघों के मोंर्चो पर टूट पड़ी। दूसरी ओर से दल खालसा ने उत्तर में 'बोले सो निहाल, सत श्री अकाल' जय घोष कर के उत्तर दिया और छोटी तोंपों के मुंह खोल दिये। यह तोपे भूमिगत अदृश्य मोर्चो में थी अंत इनकी मार ने शाही सेना की अगली पंक्ति उड़ा दी। बस फिर क्या था शाही सेना भी अपनी असंख्य बड़ी तोपो का प्रयोग करने लगी। दल खालसा वृक्षों की आड़ में हो गया। जैसे ही शत्रु सेना की तोपों की स्थिति स्पष्ट हुई शाहबाज सिंह के तोपचियों ने अपने अचूक निशानों से शत्रु सेना की तोपों का सदा के लिए शांत करने का अभियान प्रारम्भ कर दिया

जल्दी ही गोला–बारी बहुत धीमी पड़ गई। क्योंकि शत्रु सेना के तोपची अधिकांश मारे जा चुके थे। अब मुग़ल सेना ने हाथियों की कतार को सामने किया परन्तु दल खालसा ने अपनी निर्धरित नीति के अंतर्गत वही स्थिति रख कर हाथियों पर तोप के गोले बरसाए इस से हाथियों में भगदड़ मच गई। इस बात का लाभ उठाते हुए घोड़े सवार सिंह शत्रु खेमे में घुसने में सफल हो गये और हाथियों की कतार टूट गई। बस फिर क्या था? सिंघों ने लम्बे समय से हृदय में प्रतिशोध की भावना जो पाल रखी थी, उस अग्नि को ज्वाला बनाकर शत्रु पर टूट पड़े। जैसे–जैसे दोपहर होती गई जहादियों का दम टूटने लगा उन्हें जेहाद का नारा धेखा लगने लगा, इस प्रकार ग़ाजी धीरे–धीरे पीछे खिसकने लगे। वह इतने हताश हुए कि मध्य दोपहरी तक सभी भाग खड़े हुए। दल खालसे का मनोबल बहुत उच्च स्तर पर था। वे मरना तो जानते थे, पीछे हटना नहीं। तभी गददार सुच्चानंद के भतीजे गंडामल ने जब खालसा दल मुग़लों पर भारी पड़ रहा था, तो अपने साथियों के साथ भागना शुरू कर दिया। इस से सिंघों के पैर उखड़ने लगे क्योंकि कुछ नौसिखिए सैनिक भी गर्मी की परेशानी न झेलते हुए पीछे हटने लगे। यह देखकर मुग़ल फौजियों की बाछें खिल उठी। इस समय अबदुल रहमान ने वजीद खान को सूचना भेजी गंडामल ब्रह्माण ने अपना इकरार पूरा कर दिखाया है, जहांपनाह। इस पर वजीद खान ठहाका मार के हंसा और कहने लगा, 'अब मरदूद बंदे की कुमक क्या करती है, बस देखना तो यहीं है। अब देरी न करो बाकी फौज भी मैदान–ए–जंग में भेंज दो, इन्शा–अल्ला जीत हमारी ही होगी । दूसरी तरफ जत्थेदार बंदा सिंह और उसके संकट कालीन साथी अजीत सिंह यह दृश्य देख रहे थे। अजीत सिंह ने आज्ञा मांगी 'गंडामल और उस के सवारों को गद्दारी का इनाम दिया जाये। परन्तु बंदा सिंह हंसकर कहने लगा' मैं यह पहले से ही जानता था खैर.....अब आप ताजा दम संकट कुमक लेकर विकट परिस्थितीयों में पड़े सैनिकों का स्थान लो।

अजीत सिंह तुरन्त आदेश का पालन करता हुआ वहां पहुंचा जहां सिंघों को कुछ पीछे हटना पड़ गया था। फिर से घमासान युद्ध प्रारम्भ हो गया। मुग़लो की आशा के विपरीत सिंघों की ताजा दम कुमक ने रणक्षेत्र का पासा ही मोड़ दिया। सिंह फिर से आगे बढ़ने लगे। इस प्रकार युद्ध लड़ते हुए दोपहर

BANDA SINGH BAHADUR

ढलने लगी। जो मुग़ल कुछ ही देर में अपनी जीत के अंदाजे लगा रहे थे। वह भूख–प्यास के मारे पीछे हटने लगे किन्तुं वह भी जानते थे कि इस बार की हार उनके हाथ से सरहिन्द तो जायेगा ही, साथ में मृत्यु भी निश्चित ही है। अतः वह अपना अंतिम दाव भी लगाना चाहते थे। इस बार वजीद खान ने अपना सभी कुछ दाव पर लगाकर फौज को ललकारा और कहा – 'चलो ग़ाजियों आगे बढ़ो और काफ़िरों को मार कर इस्लाम पर मंडरा रहे खतरे को हमेशा के लिए खत्म कर दो। इस हल्ला शेरी से युद्ध एक बार फिर भड़क उठा। इस बार उपसेना नायक बाज सिंह, जत्थेदार बंदा सिंह के पास पहुंचा और उसने बार–बार स्थिति पलटने की बात बताई। इस बार बंदा सिंह स्वयं उठा। सभी जानते थे कि युद्ध का परिणाम आखरी दाव में छिपा हुआ है, अतः दोनों ओर के सैनिक कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते थे। सभी सैनिक एक–दूसरे से गुत्थम–गुत्था होकर विजयी होने की चाहत रखते थे।

ऐसे में बंदा सिंह ने अपने गुरूदेव श्री गुरू गोबिंद सिंह जी द्वारा प्रदान वह बाण निकाला जो उसे संकट काल सें प्रयोग करने के लिए दिया गया था। गुरूदेव जी ने उसे बताया था, वह बाण आत्मबल का प्रतीक है। इस के प्रयोग पर समस्त अदृश्य शक्तियां तुम्हारी सहायता करेगी। ऐसा ही हुआ देखते ही देखते वजीद खान मारा गया और शत्रु सेना के कुछ ही क्षणों में पैर उखड़ गये और वे भागने लगे। इस समय का सिंहों ने भरपूर लाभ उठाया, उन्होंने तुरन्त मलेरकोटला के नवाब शेर मुहम्मद खान तथा ख्वाजा अली को घेर लिया वे अकेले पड़ गये थे। उनकी सेना भागने में ही अपना भला समझ रही थी। इन दोनों को भी बाज सिंह व फतेह सिंह ने रणभूमि में मुकाबले में मार गिराया। इनके मरते ही समस्त मुग़ल सेना जान बचाती हुई सरहिन्द की ओर भाग गई। सिंघो ने उनका पीछा किया किन्तु जत्थेदार ने उन्हें तुरन्त वापस आने का आदेश भेजा। उन का विचार था कि हमें समय की नज़ाकत को ध्यान मे रखते हुए अपने घायलों की सेवा पहले करनी चाहिए। उसके बाद जीते हुए सैनिकों की सामग्री कब्जे में लेना चाहिए। इस के बाद शहीदों को सैनिक सम्मान के साथ अंतिम संस्कार उनकी रीति अनुसार करने चाहिए। यह ऐतिहासिक विजय 12 मई सन् 1710 को दल खालसे को प्राप्त हुई। इस समय दल की कुल संख्या 70 हजार के लगभग थी। इस युद्ध में 30 हजार सिंह काम आये और लगभग 20 हजार घायल हुए। लगभग यही स्थिति शत्रु पक्ष की भी थी। उनके ग़ाजी अधिकांश भाग गये थे। युद्ध सामग्री में सिंघों को 45 बड़ी तोपे, हाथी, घोड़े व बंदूके बड़ी संख्या मे प्राप्त हुई।

खेल खेल में

हम अक्सर पढ़ाई को खेल से ज्यादा महत्व देते हैं। ज्यादातर लोग ये मानते है की खेल से समय बर्बाद होता है व जीवन में शिक्षा ही सफलता का मूल मंत्र है। इसका एक कारण है अज्ञानता और इसी कारण खेल पर किसी का ध्यान नहीं गया। यद्धपि बिना खेल के शिक्षा अधूरी है। खेल, जीवन में न सिर्फ व्यायाम का स्रोत हैं अपितु सामाजिक शिक्षा का एक मजबूत स्तंभ है। खेल नेतृत्व क्षमता का विकास कर दूसरों के साथ समन्वय कर एक टीम की तरह काम करना सिखाता है। यह सामाजिक व्यवहार की गहरी नींव रखता है। सभी ये भली भांति जानते है की जीवन में सफल होने के लिए शिक्षा व क्षमता के साथ चरित्र का होना अत्यंत आवश्यक है और खेल चरित्र निर्माण का सबसे आसान तरीका है।

भारत का खेलो में अपना एक इतिहास रहा है। भारत पूरे विश्व में हॉकी के खेल के लिए जाना जाता रहा है। वहीं कबड्डी और खो–खो तो भारत के पारंपरिक खेलों में हैं। खेल समाज शास्त्र, मनोविज्ञान सामाजिक ज्ञान की आधारशिला हैं। जरूरत है बस खेलने की इच्छा की। हमने देखा सभी खेल एक जैसे नहीं होते। जैसे फुटबाल में पैरों या निचले शरीर (Lower Body) का उपयोग होता है। हाथों का इस्तेमाल वर्जित है। इसमें एक टीम से 11 खिलाड़ी एक साथ मैदान पर होते है। वहीं हॉकी में हाथों व पैरों (footwork) दोनो की कुशलता आवश्यक है। इसमें झुक कर रफ्तार से दौड़ना पड़ता है जो काफी कठिन होता है। झुक कर चकमा देते हुए दौड़ना सैनिक अभ्यास में भी बहुत महत्वपूर्ण होता है, साथ ही एक अच्छा सैनिक बनने के लिए एक टीम प्लेयर होना बहुत आवश्यक है। इसमें भी एक टीम से 11 खिलाड़ी एक साथ मैदान पर होते है। बास्केट बॉल में भी पूरे शरीर की कुशलता चाहिए। लेकिन इसमें सिर्फ 5 खिलाड़ी एक टीम में एक समय पर खेल सकते है। मैदान पर खेलना समय की बरबादी नही होती लेकिन घंटो वीडियो गेम या टीवी पर खेल देखना जैसे क्रिकेट (जो पूरा पूरा दिन खेले जाते हैं) जहां क्रिकेट का तीव्रतम खेल टी 20 का मैच कम से कम 3 घंटे लेता है और सामान्य वन डे मैच 9 घंटे तक चलता है। वहीं फुटबाल 90 मिनट, हॉकी 60 मिनट और बास्केटबाल, कबड्डी और खो–खो मैच सिर्फ 40 मिनट का होता है। कबड्डी और खो–खो खेलने के लिए ज्यादा जगह या किसी विशेष वस्तु की आवश्यकता नहीं होती है। हर खेल जीवन के कई गुण आसानी से सिखाता है जैसे कबड्डी जहां एक साथ कई लोगो से जूझना सिखाता है वही साथ मिलकर प्रतिद्वंदी पर काबू करना भी सिखाता है साथ ही सांस टूटने तक यानी अंत तक प्रयासरत रहने की इच्छाशक्ति जगाता है खेल किसी युद्ध से कम नहीं है। जब दो देश खेल के मैदान पर टकराते है तो वह किसी युद्ध से कम नहीं होता। विश्व पटल पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए शीत युद्ध के समय सोवियत संघ और अमेरिका ने अपने खिलाड़ियों को अपने सैनिक के रूप में मैदान पर उतारा था। खेल अनुभवात्मक शिक्षा (eÛperiential learning) का स्रोत है इसलिए बेशक आप खेल को अपना रोजगार (Professional Career) न बनाए लेकिन यदि भविष्य से खिलवाड़ नहीं करना तो खेल चुनौती स्वीकार कर मैदान में उतरें।

चाहे खेल हो युद्ध हो या जीवन, जीतेगा वही जो खेलेगा। और हार को स्वीकार करके आगे बढ़ने का मंत्र जितनी आसानी से खेल से सीखा जा सकता है वह और कोई गुरु नहीं सीखा सकता। इसलिए खेलो और जीवन में विजयी बनो।

–मेजर निशा सिंह

राष्ट्रहित सर्वोपरि

– डॉ हेमेन्द्र यादव

शिकारपुर (बुलंदशहर): रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर, खण्डवाया, शिकारपुर में स्वतंत्रता के 75वे वर्ष में अमृत–महोत्सव तथा सैनिक मित्र योजना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि माननीय श्री इंद्रेश कुमार जी (अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) ने दीप प्रज्वलन कर कहा कि 1857 की क्रांति से लेकर क्रांतिकारियों ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया अनेकों वीर बलिदान हुए जिनके कारण आज हम सुख पूर्वक जीवन जी रहे हैं इसीलिए हम सबका भी दायित्व बनता है कि हम उन सभी बलिदानियों के पद चिन्हों पर चलकर भारत को अखंड राष्ट्र बनाएं जिसमें एक राष्ट्र एक संविधान और एक ध्वज की परिकल्पना हो तथा भारत विश्व में विश्वगुरु के पद पर आसीन हो।

कार्यक्रम में मुख्यवक्ता यतेन्द्र कुमार जी (अ० भा० सह संगठन मंत्री, विद्या भारती) ने कहा कि शिक्षा का स्थान मानव जीवन सर्वोपरि होता है जिसके कारण किसी भी समाज व राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है यदि शिक्षा नहीं है तो वह राष्ट्र उन्नति नहीं कर पाता, इसी कारण विद्या भारती के हजारों विद्यालय शिक्षा का प्रचार प्रसार कर रहे हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए उद्योगपति अनिल त्यागी जी ने कहा कि समाज के द्वारा विद्यालय में बढ़–चढ़कर सहयोग करना चाहिए जिस से नई पीढ़ी शिक्षा की ओर अग्रसर हो। सी०एल० बरेजा जी ने कार्यक्रम में आए सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

विद्यालय के प्रबंधक देवेंद्र कुमार ने मंच का संचालन किया। कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाचार्य गोविंद गुप्ता जी, संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री गंगाराम जी, मनवीर सिंह जी, योगेश कौशिक जी, नरेश सिंघल जी, राजीव बंसल जी आदि उपस्थित रहे।

सैनिक मित्र योजना के विस्तारीकरण पर कार्यकारिणी समिति की बैठक

रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर की राष्ट्रीय सलाहकार समिति की बैठक गाजियाबाद में संपन्न

07 नवंबर 2021 को रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर की राष्ट्रीय सलाहकार समिति की बैठक गाजियाबाद में संपन्न हुई। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर प्रदेश के क्षेत्र संघचालक श्री सूर्य प्रकाश टोंक ने कहा कि समाज की सामूहिक शक्ति असीमित होती है जिसके सामने कोई बाधा ठहर नहीं पाती है। उन्होंने कहा कि सामाजिक इच्छाशक्ति और सामूहिक प्रयास से निर्मित रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर में संस्कारित और देशभक्त प्रतिभाओं का निर्माण हो रहा है। इतने अल्प समय में रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर की ख्याति पूरे देश में फैली है और देश भर के विद्यार्थी यहां शिक्षा ग्रहण करने और सेना में अपने भविष्य निर्माण का सपना संजोए आ रहे हैं।

बैठक में समिति के सदस्यों ने समाज के सहयोग से निर्मित एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा संचालित देश के प्रथम सैनिक विद्या मंदिर में चल रहे वर्तमान शैक्षणिक सत्र की उपलब्धियों पर चर्चा की एवं आगामी सत्र की योजना पर विचार किया। समिति के सदस्यों ने रज्जू भैया के जन्म दिवस 29 जनवरी को हर वर्ष वार्षिकोत्सव के रूप में मनाने की सहमति प्रदान की।

राष्ट्रीय सलाहकार समिति के सदस्यों ने इस अवसर पर उत्तराखंड से आए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वन एवं जल संरक्षण गतिविधि के प्रांत प्रमुख डॉ

रघुवीर सिंह रावत का भारत सरकार के राष्ट्रीय पर्यावरण समिति के चेयरमैन मनोनीत होने पर विशेष स्वागत किया। रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर के क्षेत्र में स्वतंत्रता सेनानी व आंदोलनकारियों से संबंधित स्मृतियों को सुरक्षित रखने के लिए म्युज़ियम बनाने का प्रस्ताव श्री यतेंद्र जी समाजसेवी ने रखा जिसे सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री गोविंद गुप्ता जी ने विद्यालय की वर्तमान स्थिति, शैक्षणिक कार्य तथा विद्यालय में उपस्थित सभी 11 राज्यों के 96 विद्यार्थियों के विकास संबंधी रिपोर्ट प्रस्तुत की ।

बैठक में राष्ट्रीय सलाहकार समिति के सदस्यों में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के क्षेत्रिय कार्यकारिणी सदस्य श्री गंगाराम जी, सेवा निवृत्त कमांडर सुकुमार राय भास्कर, विद्या मंदिर के निदेशक कर्नल शिव प्रताप सिंह, उद्योगपति श्री सी एल बरेजा, सीए श्री जैनपाल जैन, सचिव श्री देवेन्द्र शर्मा, आई आई टी रूड़की के डीन प्रो. एम एल शर्मा, समाजसेवी श्री विजय पाल बघेल, समाजसेवी श्री लक्ष्मी प्रसाद जायसवाल, श्री अजय कुमार गुप्ता, श्री योगेश कुमार कौशिक, श्री सुनील गर्ग, श्री कैलाश राघव, श्री विनोद कुमार कौशिक, श्री कैलाश चन्द्र अग्रवाल, श्री विशोक कुमार उपस्थित रहे।

आपको हमारा यह अंक कैसा लगा अपनी राय एवं अपने सुझाव हमें निम्न ई–मेल smsamvad@gmail.com पर अवश्य भेजें।

सम्पादकः प्रमोद कामत, **उप–सम्पादकः** दीपक स्वरूप
संरक्षकः डा. हेमेन्द्र सिंह यादव, **सलाहकार मण्डलः** रवि पाराशर एवं विनोद राजपूत